शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

अंक - 9 : माह-सितंबर 2023

–: आशीर्वाद :–

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु-संदेश

शिव-दर्शन

शिवजी के दर्शन से पूर्व मूल मंदिर के बाहर नंदी जी के दर्शन करने का महत्व है। नंदी जी महाराज हमेशा नेत्र बंद करके ध्यानासन में बैठे रहते हैं। दर्शन करने वाले को अपने दाएं हाथ के अंगूठे व अनामिका (सबसे छोटी अंगुली) को नंदी के सींगों पर रखना चाहिए वह बाकी बीच की तीनों उंगलियों को मोड़ लेना चाहिए। फिर बाएं हाथ से नंदी जी के पिछवाड़े पर हाथ लगाकर थोड़ा दबाव लगाना है। इस क्रिया से नंदी जी जागृत हो जाते हैं। नंदी जी के जागृत होते ही भोले बाबा भी आंख खोल लेते हैं। नंदी जी व भोले बाबा के साथ ही वहां स्थापित कच्छप भी जागृत हो जाते हैं, उन्हें भी स्पर्श कर प्रणाम करें। जागृत अवस्था में नंदी जी के कान में कही गई बात या मनोकामना भोले बाबा तक सीधे पहुंच जाती है। इसके बाद भोले बाबा को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती है।

इसके बाद शिव जी के दर्शन के लिए मंदिर में प्रवेश करें तब दहलीज पर तीन बार हाथ लगाकर विष्णु नाम से उच्चारण करते हुए नमस्कार करें। फिर दहलीज पर बिना पांव रखे यानी उल्लंघन करके मंदिर में प्रवेश करना चाहिए। भोले बाबा को प्रणाम, जलाभिषेक या बिल्व पत्र आदि अर्पित करने के बाद उनकी परिक्रमा करते हैं। यह ध्यान रहे कि अन्य देवों की भांति शिवलिंग की पूरी परिक्रमा नहीं होती है। जलाधारी के मुंह तक ही यानी आधी परिक्रमा ही करनी चाहिए। शिव-दर्शन के लिए सामान्य रूप से इन बातों का पालन करके हम शिव को प्रसन्न कर सकते हैं।

आपकी अपनी

प्रभु बा

संपादकीय

सहज अभिव्यक्ति

कबीर साहेब की एक बड़ी प्रसिद्ध साखी है –

सब धरती कागज करूं,
लेखनी सब बनराय।
सात समंद की मसि करूं,
गुरु गुण लिख्या न जाय।।

अर्थात् सारी पृथ्वी को ही कागज का रूप दे दें, जितनी भी वनस्पतियां हैं उनकी डालियों को कलम बना लें और सातों महासागरों के जल को स्याही बना दें तो भी गुरु के महत्व को लिखना संभव नहीं है।

इस अर्थ से तो कितना भी प्रयास कर लो, कितना भी वृहद् प्रयत्न कर लो, कितनी भी अवधि तक अनुष्ठानिक कार्य कर लो पर गुरु महिमा को लिख पाना असंभव है। तो क्या गुरु महिमा अज्ञात है और अज्ञात ही रहेगी? ऐसा तो नहीं है। कितने ही साधकों ने गुरु महिमा को जाना भी है और तो और गुरु ने पात्र शिष्यों को जनाया भी है। तो यह कैसे संभव हुआ है?

सच तो यह है कि गुरु महिमा को व्यक्त करना मुश्किल है न कि गुरु को अनुभव करना। व्यक्त करने के लिए बाहरी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की जरूरत होती है जबकि अनुभव करने के लिए भीतरी भाव की। बाहरी प्रयासों से किया गया कार्य कितना भी अच्छा हो पर पूर्णता को उपलब्ध नहीं हो सकता। भीतरी भाव भले ही श्रेष्ठतम न भी हो तो भी पूर्णता की ओर प्रयाण के प्रतीक तो हैं ही।

इसलिए ही कबीर कहते हैं कि चाहे असंभव कार्य भी कर डालो जो उन्होंने साखी में कहे हैं परंतु गुरु महिमा को जानना नहीं हो सकेगा। वह तो केवल और केवल अनुभव की बात है। यह अनुभव साधन से ही संभव है। जैसे-जैसे साधन की उत्कृष्टता आएगी वैसे-वैसे गुरु-गुण न केवल दिखने लगेंगे वरन् भीतर उतरने भी लगेंगे। इसलिए हमारे सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा बारंबार यही कहते हैं कि सारी बातें छोड़ो, ध्यान और जप के द्वारा जो संभव है उसे स्वयं संभव करके अनुभव का खजाना पा लो।

यह केवल संकेत नहीं बल्कि आह्वान है। ऐसे सद्गुरु जो खुद अनुभव का अमृत हर पल चखते हैं वो हमें भी उस अमर स्वाद का आनंद देना चाहते हैं। आगे बढ़कर हम संकल्प करें तो हम भी अमृतपायी हो सकते हैं।

- स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

साधन-संपदा

ध्यान-पद्धति

ध्यान के विषय में आजकल बहुत चर्चा रहती है। किसी भी आश्रम, मत, संप्रदाय में ध्यान के प्रयोग प्रमुख रूप से साधना के अंग हो गए हैं। ध्यान एक पुरातन व अनुभूत पद्धति होने के कारण बहुप्रचलित है। अलग-अलग सद्गुरुओं ने अपनी परंपरा व अपने स्वयं के अनुभव जोड़ते हुए ध्यान के चरण व प्रयोग बताए हैं। इसी कारण ध्यान के अलग-अलग नाम भी प्रचलन में है तो विधियां भी। हां, पर यह पक्का है कि सभी ध्यान के द्वारा अंतर्यात्रा का ही आग्रह करते हैं।

अपने वासुदेव कुटुंब में भी ध्यान पर ही सर्वाधिक आग्रह है। गुरुदेव का तो इतना मानना है कि यदि साधक ध्यान ही कर ले तो उसे अन्य कोई साधन करने की भी आवश्यकता नहीं रहती है। हां, यदि वह स्वरूचि से जो भी अन्य साधन करना चाहे उसकी मनाही नहीं है।

हम सभी साधकों को गुरुदेव ने अपनी शक्ति को समाहित करते हुए एक जागृत आसन दिया है। यह प्रतीकात्मक भाषा में सद्गुरु की गोद है। यानी गुरुदेव अपने संरक्षण में हमें ध्यान की यात्रा पर ले चलना चाहते हैं। ध्यान के लिए हमारे मार्ग में कोई विशेष निर्धारित प्रक्रिया नहीं है क्योंकि हमारा साधन क्रियासाध्य न होकर कृपासाध्य है।

गुरुदेव का अनुभव है कि सद्गुरु अपनी कृपा से साधक की सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर देते हैं। जागृति के लिए वे अपने ध्यान व जप-तप का कुछ अंश उसमें उतारते हैं। इस प्रभाव से शक्ति जागरण होता है। सद्गुरु द्वारा दिए गए आसन पर बैठकर साधक उस शक्ति को द्रष्टाभाव से देखते हैं। शरीर की शुद्धि के साथ ही अन्य क्रियाएं भी होने लगती हैं। इसके बाद नियमित दो घंटा प्रतिदिन (सुबह-शाम एक-एक घंटा) आसन पर बैठने मात्र से गहरा ध्यान लगने लगता है। ध्यान धीरे-धीरे साधक को निर्विकल्प व निर्विचार अवस्था की ओर ले चलता है। यही शून्यावस्था है तथा यहीं पर आनंद का स्रोत है। इसमें कोई प्रयास नहीं करना होता बल्कि स्वयं को सद्गुरु के हवाले कर देना होता है।

पाथेय-प्रसाद

प्रभु बा का अनुभव

देवाधिदेव-महादेव

गिरगांव मुंबई के निवास पर रहते हुए मुझे सद्गुरु कृपा से असंख्य बार अद्भुत से अनुभव हुए हैं। उस समय अनुभवों की एक पूरी शृंखला ही चली थी। ऐसा ही एक अनुभव आपको बताती हूं।

सामान्यतः हमारे परिवारों में मासिक धर्म के समय माता-बहनों को तीन दिन तक अलग रखने का रिवाज है। ऐसा मेरे परिवार में भी था। जब मैं इस अवधि में अलग रहती थी तो ज्यादातर समय जप-साधन ही चलता रहता था क्योंकि तीन दिन के एकांतिक वास में काफी समय मिल जाता था। यह अनुभव जो मैं बताने जा रही हूं मुझे कई बार हुआ है। एकांत में रहने के अवधि के लगभग दूसरे दिन भोले बाबा स्वयं प्रकट हो जाते थे। मृगछाल लपेटे, हाथ में त्रिशूल व डमरू और शरीर के अंगों पर नागों के आभूषण सजे हुए वे इस रूप में प्रकट होते थे। उनके गले में एक बहुत बड़ा नाग लिपटा रहता था। वे जब आते तब उनके नाग को देखकर मुझे बड़ा डर लगता था। वह नाग भी जोर-जोर से फन हिलाता था तथा लंबा होकर मेरी तरफ लपकता था। मैं भयभीत होकर भोले बाबा से प्रार्थना करती थी कि आपके इस नाग से मुझे बहुत डर लगता है।

यह सुनकर वे मुसकुराते और अपने गले से नाग को उतार कर नीचे रख देते। वह नाग तुरंत हमारे पानी के बड़े चरू पर जाकर लिपट जाता था। गिरगांव में उस समय पानी की बड़ी किल्लत रहती थी तो हम जब भी पानी आता तो उसे कई बर्तनों में भरकर रखते थे। यह तांबे का बड़ा चरू भी उनमें से एक था। नाग जाकर उस चरू पर लिपट जाता और फन करके डोलता रहता था। उसके दूर जाने से मेरा भय कम हो जाता था।

तब भोले बाबा मेरे पास आते थे और बड़े प्रेम से मुझे अलग-अलग प्रकार के कई मंत्र बताते थे। ये मंत्र कोई शास्त्रीय या धार्मिक न होकर जन कल्याण के मंत्र होते थे। जैसे कि शिशु रोग और विशेषकर उनसे संबंधित सूखा रोग ठीक करने के मंत्र, सांप काटने से जहर से बचाव के मंत्र, अन्य जहरीले जानवरों के काटने से बचाव के मंत्र आदि। यह सिलसिला हर महीने चलता था और काफी लंबी अवधि तक चला था।

जब भोले बाबा मंत्र बता चुके होते तो वापस अपने उस बड़े नाग को लेकर गले में धारण कर लेते और आशीर्वाद देकर चल देते। जाते समय वे पीछे मुड़कर नहीं देखते थे। उनके बताए मंत्रों से पीड़ितों की सेवा हो सके यह उनका मकसद रहता होगा तभी तो शिव को कल्याणकारी व देवाधिदेव महादेव कहा गया है।

गुरु मूरति गति चंद्रमा,
सेवक नैन चकोर।
आठ पहर निरखत रहे,
गुरु मूरति की ओर।।
– कबीर साहेब

भावार्थ – चंद्रमा गतिशील है। अपना स्थान बदलता रहता है। आसमान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता हुआ दिखाई देता है। चंद्रमा प्रेमी चकोर पक्षी एकटक चंद्रमा को निरखता रहता है। जिधर चंद्रमा जाएगा वह भी उधर ही पूरे मनोयोग से उसे देखता रहता है।

ऐसे ही गुरु चंद्रमा रूप है तो शिष्य चकोर पक्षी। शिष्य हरदम गुरु को देखता रहे तभी उसकी समर्पण भावना का पता चलता है। यहां गुरु को देखने का तात्पर्य प्रत्यक्ष तो है ही किंतु परोक्ष भी है। प्रत्यक्ष में तो गुरु का स्वरूप, गुरु का प्यार, गुरु की करुणा, गुरु का संकेत दिखता ही है। परोक्ष रूप में गुरु द्वारा बताया गया साधन ही गुरु का दर्शन है। जैसे चकोर किसी भी परिस्थिति में चंद्र दर्शन को नहीं छोड़ता वैसे ही साधक भी गुरु प्रदत्त साधन से कभी नहीं टलता है। आठ प्रहर (एक प्रहर यानी तीन घंटे, आठ प्रहर यानी चौबीसों घंटे अर्थात हर समय) साधक सद्गुरु का, सद्गुरु के प्रत्यक्ष दर्शन का, सद्गुरु के परोक्ष आशीर्वाद का चिंतन करता रहे तभी उसमें गुरु कृपा से सच्चे प्रेम का अवतरण होता है।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि चकोर को तो चंद्रमा केवल दिखता है, उसे पाना उसके लिए असंभव है। पर साधक को तो सद्गुरु न केवल दिखता है वरन् प्राप्त भी है। ऐसे दुर्लभ अवसर को गंवा देना नादानी ही कहीं जा सकती है। भक्ति आख्यानों में आया है कि प्रेम के आधिक्य के कारण चकोर किसी भी चमकती वस्तु को चंद्रमा समझकर उसे ग्रहण करने या खाने की चेष्टा करता है। कहा तो यहां तक जाता है कि वह इस भ्रम में जलती आग के अंगारे भी खाकर पचा लेता है।

एक पक्षी की भी इतनी व्याकुलता है अपने प्रियतम को पाने की तो हम तो इंसान हैं और सौभाग्यवश साधक भी हैं। हमारी क्षमता तो अनेक गुणा ज्यादा है फिर भी हम सद्गुरु के सत्य स्वरूप को देखने से चूक जाते हैं।

सांकेतिक बात

साधक जब भी आश्रम में आता है तो उसके निवास व भोजन की व्यवस्था रहती है। भोजन स्थल, क्षुधा शांति स्थल यानी अन्नपूर्णा के संबंध में कुछ बातें हर साधक को जानना ही चाहिए–

1. जब भी नाश्ते या भोजन की घंटी बजे तब अपना कार्य छोड़कर (जप के अलावा) यथाशीघ्र अन्नपूर्णा में पहुंचकर निर्धारित स्थान ग्रहण कर लें।

2. अपने साथ मोबाइल फोन है तो वह साइलेंट हो तथा उसका उपयोग बिना अनुमति के नहीं करना है।

3. पंगत में जहां खाली स्थान हो वहां कतार में बैठते जाएं न कि किसी मनवांछित स्थान पर। किसी अन्य के लिए जगह न रोकें वह जब आएंगे तब खाली उपलब्ध जगह पर बैठ जाएंगे।

4. भोजन परोसना प्रारंभ होते ही 'श्री राम जय राम जय जय राम' का उच्चारण करें कम से कम 21 बार तो यह होना ही चाहिए।

5. सबको सब खाद्य सामग्री परोस दी जाए तब 'सद्गुरु नाथ महाराज की जय' का उद्घोष होने पर ही भोजन करना प्रारंभ करें।

6. भोजन संबंधी आपका कोई परहेज है या उपवास है तो अन्नपूर्णा प्रबंधकों को पहले से ही बता दें।

7. यदि उपवास है तो प्रबंधकों से पूछ कर निर्धारित पंगत में ही बैठें।

8. जितना खा सकें उतना ही परोसवाएं, किसी भी हाल में जूठा ना छोड़ें।

9. भोजन के समय बातचीत न करें।

10. भोजन पूरा हो जाए तो तीन बार 'ॐ विष्णवे नमः' अवश्य बोलें।

11. भोजन पूरा होने पर आपकी पंगत के सभी साधकों को एक साथ ही उठने की अनुमति है इसलिए संकेत होने पर ही उठें।

12. जूठी थाली लेकर पंगत में न निकलें, पहले बाहर आ जाएं फिर अपनी थाली उठाएं।

13. निश्चित स्थान पर जाकर अपने जूठे बर्तन स्वयं साफ करें।

14. बर्तन साफ करने के बाद उन्हें व्यवस्थित स्थान पर रखें।

15. यदि आपको परोसने के लिए निर्देश है तो निश्चित पोशाक अवश्य धारण करें।

16. चाय व नाश्ते के समय पंगत का नियम नहीं रहता है इसलिए अपना कार्य पूर्ण होते ही उठ सकते हैं।

17. चाय, नाश्ता या भोजन आपको अपनी जगह पर ही परोसा जाएगा आप स्वयं लेने की कोशिश न करें।

18. यह सारी नियमावली व्यवस्था को सुचारू चलाने व शुचिता को बनाए रखने के लिए है इसलिए सबका सहयोग आवश्यक है।

लक्ष्य की ओर

जिज्ञासा-समाधान

श्रीमती नलिनी भावसार, विक्रोली, मुंबई

प्रश्न : मैंने शिवपुरी आश्रम में इस साल के अधिक मास में कई साधिकाओं को 'वाण' अर्पित करते देखा है। मैंने भी देख कर ऐसा किया है पर उसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर : 'वाण' की प्रथा महाराष्ट्रीयन हिंदू पद्धति में एक महत्वपूर्ण कर्म है। सुहागिन महिलाओं को अपने घर पर आमंत्रित करके उन्हें 'वाण' देने का रिवाज है। देवी मां को भी ओटी के साथ वाण अर्पित करने की परंपरा है। इस परंपरा के अनुसार अधिक मास या चैत्र मास में वाण दिया जाता है। वाण ओटी का ही एक रूप है इसमें गेहूं या चावल तथा अन्य शृंगार सामग्री रखी जाती है। वाण पर ऐसा मिष्टान्न जो छिद्रयुक्त हो उसे रखने का प्रावधान है। जैसे कि मालपूए, घेवर, मैसूर पाक, बताशे या घर पर बना हुआ ऐसा ही कोई मिष्टान्न। इनकी संख्या 33 होती है यानी टुकड़े हों या नग वे 33 होंगे। इसके पीछे एक पौराणिक मान्यता भी बताई जाती है कि अधिक मास के 30 दिन में हुए पाप से मुक्ति, बेटी के घर पर भोजन ग्रहण करने, सूतक वाले घर में भोजन ग्रहण करने व याचक ब्राह्मण के घर का भोजन करने के तीन दोष मिलकर कुल 33 दोष बनते हैं इनके दान से दोष मुक्ति होती है। छिद्रयुक्त मिठाई का भी बताया जाता है कि जितने छेद होंगे हमारे पूर्वज उतने ही नरकों से बच सकेंगे।

अपने वासुदेव कुटुंब में सुहागिन साधिकाएं ओटी के साथ छिद्रयुक्त मिष्टान्न के 33 नग रखकर उन्हें नए कपड़े से ढक देती हैं। उसे पर घी का दीपक जला कर रखा जाता है। वाण के लिए काम में लिए गए थाली, कटोरी, चम्मच, दीपक आदि किसी भी धातु के हो सकते हैं पर नए होने चाहिए। बरतन सहित यह सामग्री सद्गुरु को भेंट करने की प्रथा है। सद्गुरु से त्राण पाने तथा साधन में गतिमान होने के उद्देश्य से वाण अर्पण किया जाता है। यह स्वैच्छिक है यानी कोई अनिवार्य रस्म नहीं है।

ऊँची उड़ान

साधकों के अनुभव

(नजर से नजारे बदले)

प्रस्तुति - श्री नरसिंह भाई पटेल, मोडासा, गुजरात

मेरे परिवारजनों को गुरु पूर्णिमा 2023 की साप्ताहिकी में मैंने शिवपुरी में आमंत्रित किया था। वे गुरुदेव के बारे में कुछ जानते नहीं थे इसलिए कुछ तो व्यवहारवश और कुछ अनमने भाव से वहां पर आए। उनमें से कुछ रिश्तेदारों के संबंध में यही कहना चाहूंगा की गुरुदेव के दर्शन और सानिध्य से उनके विचार बिल्कुल बदल गए। प्रस्तुत है उनके शब्दों में ही कुछ अनुभव –

1. श्री चिमनभाई व श्रीमती शारदा बेन (भाई–भाभी, निवासी – दहेगाम)

मेरे छोटे भाई नरसी ने साप्ताहिकी सत्संग का आयोजन किया है। मैं रिटायर्ड हूं और समय भी है तो उसे अच्छा लगेगा यह सोचकर शिवपुरी आए। मैं धार्मिक वृत्ति का तो हूं पर किसी से दीक्षित नहीं था। प्रारंभ में मैं गायत्री परिवार से जुड़ा था। संस्थापक पूज्य आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा जी से मैंने दीक्षा का अनुरोध बहुत सालों पूर्व किया था पर संयोग नहीं था। बाद में गिरनारवासी एक संत मेरे संपर्क में रहे उनसे आग्रह किया तो उन्होंने भी दीक्षा से इनकार कर दिया। इसलिए दीक्षा लेने का भाव ही समाप्त

सा हो गया था। शिवपुरी आकर दो-तीन दिन में ही गुरुदेव का स्नेह, आश्रमवासी व अन्य साधकों का प्रेम, यहां की साधन-पद्धति तथा सत्संग के कारण दिल में दीक्षा की इच्छा जागृत हो गई। मैंने अपनी पत्नी से यह बात बताई। वह तो खुद ही इसी भाव में चल रही थी। फिर क्या था हमने दीक्षा के लिए निवेदन कर दिया। आश्चर्य यह रहा कि हमारी विनती शीघ्र ही स्वीकार हो गई और दो दिन बाद दीक्षा भी हो गई। तब ध्यान में आया कि पहले दो गुरुओं ने क्यों मना किया था हमारे सद्गुरु रूप में तो प्रभु बा ही निर्धारित थे।

मेरी पत्नी छोटे-छोटे कारणों से ही सही पर चिंतित बहुत रहती है। जब उसे दीक्षा गई दी गई तो उस प्रक्रिया में गुरुदेव ने अपने सामने कुर्सी पर बैठाया। कान में मंत्र दिया तथा अपनी शक्ति का प्रवाह करते हुए कहा कि अब निश्चिंत रहना है। उसे भी लगा कि अब हमें रक्षक मिल गया है। हम दोनों बहुत आभारी हैं।

2. सुशीला बेन (बहन, गांधीनगर)

मैं शुरू से ही आशंकित थी कि मेरा भाई नरसिंह व भाभी बार-बार शिवपुरी जाते रहते हैं कहीं यह गलत जगह तो नहीं फंस गए हैं? नरसी विदेश से भी आता तो भी तुरंत आश्रम के लिए रवाना हो जाता ऐसा क्या जादू है? जब भाई ने हमें निमंत्रण दिया तो अनेक प्रकार की शंकाएं लेकर मैं शिवपुरी आई। पहली बार आ रही थी तो गुरुदेव कैसे होंगे? आश्रम कैसा होगा? आश्रमवासी कैसे होंगे? मेरे साथ कैसा व्यवहार होगा यही सोच रही थी।

आश्रम में मैं 5 दिन रही। किसी से कोई पूछताछ नहीं की किंतु मुझे मेरे सारे सवालों के जवाब देख-देख कर ही मिल गए। 5 दिन कैसे गुजरे पता ही नहीं चला। गुरुदेव का आशीर्वाद और पुलकित चेहरा, साधकों की आत्मीयता, प्रेम और जय श्री कृष्ण कहना मुझे रुचिकर हो गया। मेरे मन में भी दीक्षा लेने का भाव जग गया। वापस घर लौटी तो लगा कि बेटे व बहू को भी ले जाकर दीक्षा दिलाऊं। ऐसा सद्गुरु मिलना सौभाग्य है।

3. जीतू भाई (भतीजा, ब्रजपुरा कंपा)

आश्रम में पहुंचते ही मुझे आनंद का अनुभव होने लगा। मेरी व पत्नी की पहले मंत्र दीक्षा हुई है। दो दिन आश्रम में रहे तो यहां का वातावरण आकर्षित करने लगा। मन में इच्छा होने लगी कि दीक्षा ले लें। सत्संग के बाद गुरुदेव वापस कक्ष में लौट रहे थे तो सभी दो कतार बनकर खड़े थे। गुरुदेव ने हाथ फैलाकर सभी को स्पर्श करके आशीर्वाद दिया। मैं भी कतार में था। जैसे ही मैंने गुरुदेव की हथेली पर अपने सिर व आंखों का स्पर्श किया, नमन किया वैसे ही लगा कि दोनों आंखों के मध्य भृकुटि पर कुछ गोल चक्र सा घूम रहा है। इससे मुझे आनंद आने लगा। यह मेरा पहला अनुभव था। घर जाकर पति-पत्नी दोनों ने दीक्षा हेतु आवेदन कर दिया है।

4. राजू भाई (बड़े भाई के दामाद, रूपाल कंपा)

मैं अनेक धार्मिक आयोजनों में शरीक होता रहा हूं। कई आश्रमों में गया हूं तथा कई आयोजनों में जिम्मेदारी निभाई है। हर जगह मैं जाता हूं तो मेरी नजर वहां की कमी पर ही रहती है। आश्चर्य की बात है कि जो कमियां आम व्यक्ति को नहीं दिखती वे मुझे साफ दिख जाती है। शिवपुरी भी मैं इसी भाव से ही आया था।

किंतु यहां आकर मैं मात खा गया। व्यवस्था हो या सत्संग कहीं कोई कमी नजर ही नहीं आई। सद्‌गुरु के आदेश-निर्देश से सब कार्य स्वतः चलते रहते हैं, यह अच्छा लगा। जब मैं आश्रम में आया तब अखंड नाम जप चल रहा था। इतनी मधुरता व स्वाभाविकता थी कि उठने का मन नहीं हो रहा था। मैं पहले भी 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करता था पर यहां शरीक होकर मानो वह जीवंत हो गया। दो दिन रहकर लौटना पड़ा किंतु ऐसा लगा कि जल्दी ही वापस आऊंगा।

बात कहां तक पहुंची

1. श्री आशुतोष यादव, इन्दौर

शिव गरिमा का अगस्त अंक जैसे ही प्राप्त हुआ मुखपृष्ठ से नजर हटी ही नहीं। सद्गुरुकृपा से साधक बंधु श्री प्रमोद सोनी ने सुंदर चित्र संयोजन किया है। सद्गुरु प्रभु बा ने श्रावण में शिव पूजन व जलाभिषेक के महत्व को सुंदर रेखांकित किया है। हमें यंत्रवत पूजा के बजाय उसके उसके गूढ़ व सूक्ष्म अर्थ को समझाया है। देह देवालय में स्थित कुंडलिनी शक्ति को जप व ज्ञान के साधन से शिव से मिलना ही अनुष्ठान है। हम सौभाग्यशाली हैं कि ध्यान मार्ग से परम तत्व को जानने की कुंजी गुरुदेव ने सहज ही प्रदान कर दी है। हमें भी सुशिष्य की कसौटी पर खरा उतरने के लिए प्रयास करना होगा। हमारे सद्गुरु मितभाषी हैं तथा उपदेश नहीं करते इसलिए उनके संदेश व अनुभव को 'शिव-गरिमा मासिक ई पत्रिका' के माध्यम से जानना आनंददायक है। पत्रिका पढ़ने के बाद भी ऑडियो जरूर सुनता हूं। श्री संजय शुक्ला के स्वर में यह नवाचार अच्छा व प्रभावी है।

2. श्री नवीन मिश्रा, कैलिफोर्निया

शिव गरिमा का बेसब्री से इंतजार रहता है। सद्गुरु संदेश में सद्गुरु की अमृतवाणी पढ़कर बहुत आनंद होता है। ऑडियो होने से और सहूलियत हो गई है।
शिव गरिमा के संबंध में कुछ काव्य पंक्तियां प्रस्तुत हैं –

शिव गरिमा अमृत की धार है
यह अद्भुत है, महान है।
यह सद्गुरु शिव की लीला है
गुरु महिमा का गान है।
सद्गुरु का स्नेह बसा है
साधकों के प्राण व मन।
उनके लिए कभी छेड़ें वे मुरली–तान,
कभी वे रक्षार्थ उठाएं गोवर्धन।

3. श्रीमती आभा पाल, रायपुर

शिव गरिमा का अगस्त (सावन) अंक सावन जितना ही सुंदर, पावन व ऊर्जा देने वाला है। हमारे सद्गुरु ने सावन मास में साधकों के लिए शिव पूजन के महत्व और साधन की विशेषता को बताकर पुनः हमारा मार्गदर्शन किया है। सहज अभिव्यक्ति (संपादकीय) में कितनी सुंदर सद्गुरु व्याख्या की है– 'ग्रंथ, तीर्थ, संत, सत्संग सब मिला दें तो सद्गुरु बनता है। साधक की पूर्ण निष्ठा ही सद्गुरु के अंतःकरण में प्रवेश का द्वार है।'

स्मिता ताई के अनुभव में सासू मां का अनुभव अच्छा है। ऐसे ही अनुभव मेरी मां व सासू मां को भी हुए थे। सद्गुरु साधकों व उनके परिवार पर असीम कृपा करते ही हैं।
एक छोटी सी प्रार्थना है –

सर पर सद्गुरु का हाथ हो,
मन में उनके दर्शन की आस हो।
बस केवल उन पर ही विश्वास हो,
कामना है कि हर सांस में उनका वास हो।

विगत दिनों संपन्न कार्यक्रम

1. जुलाई 31 से 7 अगस्त तक अधिक मास साप्ताहिकी शिव त्रिशूल आश्रम, उदयपुर में स्थानीय श्रद्धा समिति द्वारा आयोजित की गई।

2. अधिक मास के अंतर्गत शिव त्रैलोक्य आश्रम, बदलापुर में सामूहिक महा विष्णु पूजा, 12 घंटे के अखंड नाम जप व अन्य धार्मिक कार्यक्रम हुए।

3. शिव त्रैलोक्य आश्रम, बदलापुर के तत्वावधान में 13 अगस्त को रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ।

4. अगस्त 14 को पातालेश्वर महादेव शिव त्रैलोक्य आश्रम, बदलापुर में छप्पन भोग धराये गए।

5. परमपूज्य परमहंस वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज के आदेश पर सद्गुरु प्रभु बा द्वारा प्रारंभ साप्ताहिकी सत्संग को 30 वर्ष पूर्ण होने पर 5 अगस्त को उदयपुर में प्रसन्नता पर्व हुआ।

6. अगस्त 15 को काशी शिवपुरी आश्रम में एवं गुप्तेश्वर महादेव पर महामृत्युंजय संपुट सहित रुद्राभिषेक किया गया।

7. अगस्त 16 से 23 तक शिव पार्थेश्वर पूजन अनुष्ठान की प्रथम साप्ताहिकी काशी शिवपुरी आश्रम में संपन्न। आयोजक – श्री गोपाल जोशी श्री जयंत जोशी व शिवदत्त केंद्र परिवार नागपुर।

8. अगस्त 23 से 30 तक शिव पार्थेश्वर पूजन अनुष्ठान की दूसरी साप्ताहिकी काशी शिवपुरी आश्रम में संपन्न। आयोजक – श्रद्धा समिति सौराष्ट्र, गुजरात।

9. अगस्त 30 को सद्गुरु परमपूज्य परमहंस राजयोगी प्रभु बा के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व संपन्न।

सूचनाएं

1. शिव—गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं।

2. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रुप से केन्द्र संचालक एक कॉपी अवश्य केन्द्र पर रख सकते हैं।

3. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।

4. सभी केन्द्र संचालक महानुभावों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के पठन हेतु सभी साधकों को प्रेरित करें व उन्हें अपनी प्रतिक्रिया लिखने को भी कहें। आप स्वयं भी लिखने का अभ्यास बनावें।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा
संचालित काशी शिवपुरी आश्रम,
ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर,
जिला—सलुम्बर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव—गरिमा'
ई—मासिकी, निः शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद,
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं
स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा),
ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी,
स्वरः संजय शुक्ला

— संपर्क सूत्र —
आश्रम : 9929681423
स्वामी दादाः 9950502409
संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com

Prabhu Baa App